शांति का विकास शिक्षा से संभव

डॉ. जय प्रकाश सिंह*

शोध सारांशिका

आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य को देखें तो एक तरफ जहाँ रूस का यूक्रेन से, इजराइल का हमास से, युद्ध काफी लंबे समय से चला आ रहा है; तो दूसरी तरफ चीन ताइवान पर आए दिन युद्ध की धमकी देता रहता है। इस तरह के अनेक उदाहरण समय–समय पर दिखाई देते हैं। विश्व के किसी भी क्षेत्र का व्यक्ति यह नहीं चाहता, कि अशांति रहे, क्योंकि विकास की पहली सीढ़ी 'शांति' है। बल्कि सभी चाहते हैं, कि शांति होनी चाहिए। विश्वशांति के मार्ग में यूनेस्को के कार्य महत्त्वपूर्ण दिशा में हो रहे हैं। इसी कारण, हर देश की सरकार शांति को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा को माध्यम के रूप में स्वीकार करती है।

प्रस्तावना

आधुनिकता के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सभी देशों में तकनीकी रूप से काफी विकास हो रहे हैं, किन्तु विकास जितनी तेजी से कर रहे हैं उतनी ही तेजी से तरह–तरह की नई–नई समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इनमें कहीं आतंकवाद है तो कहीं क्षेत्रवाद है, कहीं रूढ़िवाद है, और कहीं अन्य तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। अपनी स्वार्थसिद्धि के सिद्धांतों पर आधारित विकास के कारण ये समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। आज मानव–मूल्य, नैतिकता और सामाजिकता का स्तर दिनों दिन निम्न होता हुआ दिखाई दे रहा है। इसीलिए आवश्यक है, कि आज विशेष रूप से युवा वर्ग में और खास तौर से किशोर बालकों के जो कि ज्यादा संवेदनशील होते हैं, दिमाग में शांति का बीजारोपण कर दिया जाए, जिससे अच्छे नागरिकों का निर्माण हो सके।

महात्मा गांधी– "अगर हम विश्व को शांति का पाठ पढ़ना चाहते हैं तो हमें शुरुआत बच्चों से करनी होगी।"

मारिया मांटेसरी– "सारी शिक्षा शांति के लिए ही है।"

उपर्युक्त शिक्षा की बातें आज प्रासंगिक हैं। इसी कारण एन.सी.ई.आर.टी. ने भी शांति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे स्कूली पाठ्यक्रमों में शामिल किया, जिससे मूल्य आधारित पाठ्यक्रमों के माध्यम से छात्रों में नैतिकता और व्यावहारिकता के गुण विकसित हो सके।

डेवलपमेंट ऑफ़ एजूकेशन सोसाइटी एंड फाउंडेशन ऑफ़ एजूकेशन द्वारा 2005 में शांतिशिक्षा को शैक्षिक विकास के लिए स्कूल शिक्षा का अंग बनाने की सिफारिश की गई थी।

न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 में भी मूल्यों के विकास को ध्यान में रखते हुए इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

शांति

शांति का तात्पर्य साधारण अर्थ में सामाजिक स्तर पर व्यक्तियों या समूह के बीच संघर्ष या हिंसा के भय से मुक्ति होना माना जाता है। शांति का शाब्दिक अर्थ अमन, मौन, खामोशी अथवा हलचल के अभाव से है।

शांति में निहित तत्त्व

1. तनाव, संघर्ष और युद्ध की अनुपस्थिति।
2. अहिंसात्मक सामाजिक व्यवस्था।
3. किसी भी प्रकार के शोषण एवं अन्य की अनुपस्थिति।

उपर्युक्त पारिभाषित बातें एवं शांति में जो तत्त्व नहीं हैं, उनसे स्पष्ट होता है, कि शांति एक ऐसी व्यवस्था है, जिससे समाज में सभी के प्रति अहिंसात्मक एवं सहयोग का भाव उत्पन्न होता है।

* दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

ISBN: 978-81-985117-3-7

मदर टेरेसा ने कहा था "शांति की शुरुआत मुस्कुराहट के साथ होती है।"

व्यक्ति में शांति की समरसता से ही विकास संभव है। इसके माध्यम से आत्म–शांति के विकास द्वारा आत्म–सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार, सामाजिक शांति से समाज में सुख एवं समृद्धि बढ़ती है।

संक्षेप में कह सकते हैं, कि शांति मानव को सर्वांगीण विकास का अवसर प्रदान करती है।

शिक्षा

समाज में लोगों को जागृत करने के लिए शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के माध्यम से हम व्यक्ति के अंदर ज्ञान, समझ, कौशल द्वारा विषयवस्तु को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। कुछ शिक्षाविद् मानते हैं कि शांति के लिए शिक्षा में अलग से विषय रखे जाने से जहाँ पाठ्यक्रमों का बोझ बढ़ता है, वहीं अलग विषय के बजाय प्रत्येक विषय में शांति की विषयवस्तु को समाहित करके उन विषयों से जोड़ कर विषयवस्तु को पढ़ने से अलग से पाठ्यक्रम का बोझ कम रहेगा और समग्र रूप से समझ विकसित होगी।

शिक्षा के साधन

औपचारिक (फॉर्मल एजुकेशन)

इसके अंतर्गत स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय आते हैं। इन सभी स्तरों पर व्यावहारिक रूप से चारित्रिक, नैतिक मूल्य, प्रेरणा के पद्य, महापुरुषों की जीवनियाँ इस विषयवस्तु पर संबंधित शोध कर बच्चों को विभिन्न विषयों में शांति की विषयवस्तु को रख कर पढ़ाया जा सकता है, जिससे छात्रों में शांति के प्रति बौद्धिक एवं व्यवहारिक ज्ञान बढ़ सके। यह शैक्षणिक संस्थान में प्रजातांत्रिक मूल्य एवं शिक्षक के आदर्श मॉडल और उसके आदर्श व्यवहार के द्वारा संभव है।

अनौपचारिक (नॉन फॉर्मल)

इसके अंतर्गत परिवार, पड़ोस, समूह, धर्म–संस्कृति, सामाजिक संस्थाएँ, जनसंचार, कार्यस्थल, भ्रमण आदि आते हैं।

परिवार

परिवार के अंतर्गत सदस्यों द्वारा आपसी व्यवहार व्यवहारिक शांति का एक मॉडल रूप बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए। कहा जाता है कि परिवार ही बच्चे का पहला शैक्षणिक संस्थान है, और पहला शिक्षक यदि कोई है तो उसके माता–पिता, या यों कहें उसकी माँ है। इसलिए जरूरी है कि परिवार के सभी सदस्य आपसी व्यवहार और घर के माहौल को शांतिपूर्वक बनाए रखने में सहयोग करें, एक दूसरे को सम्मान दें, अपनी बातों को स्वतंत्र रूप से रखने का सही तरीका अपनाएं, ताकि बच्चों के अंदर भी ये गुण विकसित हो सके।

पड़ोस

घर से बाहर निकलते ही आसपास के माहौल का प्रभाव बच्चों के ऊपर पड़ता है। यदि पड़ौसी लोगों का व्यवहार आदर्श रूप में हो, तो बच्चे में भी ये गुण विकसित होंगे।

समूह

बच्चे किस समूह में रह कर पढते और खेलते हैं। उस समूह का भी प्रभाव बच्चों के ऊपर पड़ता है। बच्चा अपने समूह में ज्यादा तेजी से सीखता है। यदि समूह की संगत सही दिशा में होगी, तो बच्चे भी सही व्यवहारकुशल होंगे।

धर्म एवं संस्कृति

बच्चा जिस धर्म या संस्कृति का होता है, उस धर्म एवं संस्कृति के जीवनमूल्यों को आसानी से समझता है और व्यावहारिक रूप से अपनाता भी है, लेकिन समस्याएँ तब होती हैं, जब दूसरे धर्म एवं संस्कृति के जीवनमूल्यों को वह स्वीकार करने में संकोच करता है या स्वीकार नहीं कर पाता, तब उसे यहीं शिक्षा के माध्यम से समझने और समझाने का अवसर प्राप्त होता है। सभी धर्मों में कुछ न कुछ नैतिकता और मानवता के गुण होते हैं।

सामाजिक संस्थाएं

अपने देश में विभिन्न तरह की सामाजिक संस्थाएं हैं। प्रत्येक संस्थान की अपनी–अपनी मान्यता है। उनके आदर्श हैं। उन्हीं मान्यताओं एवं आदर्शों के आधार पर सामाजिक कल्याण की मानवतावादी नीति स्थापित होती है।

जनसंचार

इसके माध्यम से विश्व का कोई भी देश प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि सूचना एवं संचार के साधनों का इतनी तेजी से विकास होता जा रहा है, जिसके माध्यम से हमें नई–नई चीजें न सिर्फ सुनाई बल्कि दिखाई दे रही हैं। किस देश में क्या हो रहा है? उसका क्या कारण है? किस तरह की परिस्थितियों में कैसे समाधान दिया जाता है? इन सब की जानकारी पलक झपकते ही मिल जाती है। इसके पीछे सिर्फ तकनीकी विकास और सूचना का प्रसार है।इसके माध्यम से पूरा विश्व आज एक समाज के रूप में स्थापित होता जा रहा है

कार्यस्थल

एक व्यक्ति जिस जगह पर कार्य करता है, उस जगह को कार्यस्थल के रूप में जाना जाता है। वहाँ के लोगों में जो प्रजातांत्रिक व्यवस्थाएँ, आपसी संबंध और कार्यशैली हैं, वे व्यक्ति के व्यवहार के नवनिर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। कार्यस्थल पर व्यक्ति के सामने आदर्श, व्यवहार और नैतिकता स्थापित की जानी चाहिए।

भ्रमण

इसके माध्यम से व्यक्ति के अंदर विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक ज्ञान और कार्यकौशल सीखने का अवसर प्राप्त होता हैं। व्यक्ति पढ़ाई या रटन्त विद्या से ज्यादा, देख कर अथवा परिस्थितियों से समझ कर सीखता है।

उपर्युक्त सभी माध्यमों से शिक्षा प्राप्त होती है। शिक्षा के द्वारा बच्चों में निम्न नैतिक गुण विकसित होंगे, जो आगे चलकर शांति स्थापित करने में सहयोगी हो सकेंगे:–

1. शाश्वत विचार जिसमें उचित – अनुचित एवं नैतिकता की बातों को समझ पाएंगे।
2. सकारात्मक सोच के माध्यम से आपसी समरसता का व्यवहार विकसित होगा।
3. अधिकार से ज्यादा अपने कर्तव्यों का बोध होगा।
4. जीओ और जीने दो अर्थात् अपने हितों के साथ––साथ दूसरों के हितों को भी सोचेंगे।

यदि उपर्युक्त सभी गुण बालक मे विकसित होंगे तो शांति स्थापित होने में काफी सहायता मिलेगी।

निष्कर्ष

आजादी के बाद जिस प्रकार कृषि के क्षेत्र में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से अनाज के मामले में आत्मनिर्भरता को बढ़ाया गया था, उसी तरह से शांति के लिए शान्ति शिक्षा को विभिन्न स्तरों से पाठ्यक्रमों में समाहित किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों में शांति के प्रति बौद्धिक स्तर पर सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान विकसित हो सके। सभी देशों ने कितना भी तकनीकी विकास कर लिया हो, फिर भी वे विभिन्न तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं, इसका कारण है कि समाज को विभिन्न स्तरों पर तकनीकी विकास काफी प्रभावित कर रहा है, जिसमें 'संचार माध्यम व्यवस्था' से व्यावहारिक मूल्यों के नवनिर्माण को निम्न स्तर की ओर ले जा रहा है। इससे व्यक्ति में तनाव, अभद्र भाषा, रूखापन व्यवहार का प्रयोग, व्यक्ति में हिंसात्मक प्रवृत्ति ,वं आत्म पीड़ा देने वाली प्रवृत्ति दिखायी दे रही है। इसलिए यह जरूरी है कि शिक्षा के पाठ्यक्रमों में मूल्यशिक्षा एवं नैतिक शिक्षा को जोड़ कर शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में सामग्र जागृति उत्पन्न हो, ताकि भविष्य में वे शांति की स्थापना में सहयोगी बन सकें। जब व्यक्ति के अंदर मन मे शांति आएगी, तभी वह सामाजिक रूप से विकास की ओर अग्रसर होगा। सामाजिक रूप से शांति स्थापना के बाद ही हम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी शांति स्थापित करने में सहयोग दे पाएंगे।

संदर्भ सूची

1. दूगड़, बच्छराज ''विश्व शांति एवं अहिंसा प्रशिक्षण'', आचार्य शांतिसागर घाणी स्मृति ग्रंथमाला, बुढ़ाना, उतरप्रदेश – 2001
2. जैन, अलका ''अहिंसा प्रशिक्षण : एक अभिनव शांति तकनीक'', रीगल पब्लिकेशन, नई दिल्ली – 2009
3. रुहेला, एस.पी. ''विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2006
4. कौशल, अवधेश कुमार एवं चौहान, जौली, ''वैश्विक शांति शिक्षा का महत्त्व एवं योगदान'', MIJMRD. VOI IV, Issue II, Feb 2020, Online ISSN-2456-2831
5. प्रसाद, राजन्द्र ''शांति के लिए शिक्षा'', IJCRT Valume 5, Issue 4 Nov 2017 ISSN : 2320-2882